हाट्रे की व्यापार - चक्र की आलोचनाएं

* हाट्रे की (आलोचनाएं निम्न) व्यापार-चक्र की आलोचनाएं इस प्रकार है -

1. साख प्रसार या संकुचन तेजी अथवा मंदी नहीं ला सकता - पीगु के अनुसार, "बैंक मुद्रा पूर्ति मे होने वाले परिवर्तन व्यापार चक्र का अंग है, कारण नहीं मंदि की अंतिम स्थिति मे ऋण सुगमता से उपलब्ध होता है, परंतु फिर भी पुनरुत्थान लाने मे असमर्थ रहता है।

2. समृद्धि अनन्तकाल के लिए चलाई नहीं जा सकती और मंदी रोकी नहीं जा सकती :- यदि बैंकों मे मुद्रा की पूर्ति अनन्त भी हो तो भी न तो समृद्धि को अनन्तकाल के लिए चलाया जा सकता है और न ही मंदी को अनिश्चितकाल तक स्थगित किया जा सकता है।

3. व्यापारी केवल बैंक साख पर

Appointments

निर्भर रहना :— वास्तव में व्यापारी केवल बैंक साख पर ही निर्भर नहीं करते बल्कि अपने संचित कोषों से और निजी स्त्रोतों से उधार – ग्रहण द्वारा अपने व्यापार के लिए वित्त का प्रबंध करते हैं।

4. व्यापारी ब्याज दरों में परिवर्तनों से प्रभावित नहीं :— हेबर्ग के अनुसार ब्याज की दर में कमी के प्रति व्यापारियों में अनुकूल प्रतिक्रिया तभी होगी जब वे यह समझेंगे कि यह कमी स्थायी रहेगी।

5. मालसूचियों में उतार – चढ़ाव चक्र पैदा नहीं कर सकते — हेबर्ग के अनुसार मालसूचियों के उतार – चढ़ाव बहुत हुआ तो, छोटे चक्र पैदा कर सकते हैं जिन्हें सही अर्थ में चक्र नहीं कहा जा सकता।

6. व्यापारियों के निर्णय ब्याज दर परिवर्तनों से प्रभावित नहीं — वास्तविकता यह है कि इस प्रकार के निर्णयों को प्रभावित करने में ब्याज दर के अतिरिक्त अन्य अधिक महत्वपूर्ण हैं। इन कारकों के अंतर्गत व्यापार प्रत्याशाएं

कैम्प परिवर्तन, मंडल लगाना आदि है।

7. यह सिद्धांत पंथ की आवर्तिता (Periodicity) की व्याख्या करने में असमर्थ है।

अंत में कहा जा सकता है कि ह्यूम का सिद्धांत अपूर्ण है क्योंकि यह केवल भौतिक साधनों पर बल देता है और गैर-भौतिक साधनों का, जैसे धर्म-प्रवर्तन, पूजा स्तोत्र, सामाजिक-धार्मिक अंतः संबंध आदि का, पूर्णरूप से उपेक्षा करता है।

Priyanka